राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 990

गुणीक

भौकाल

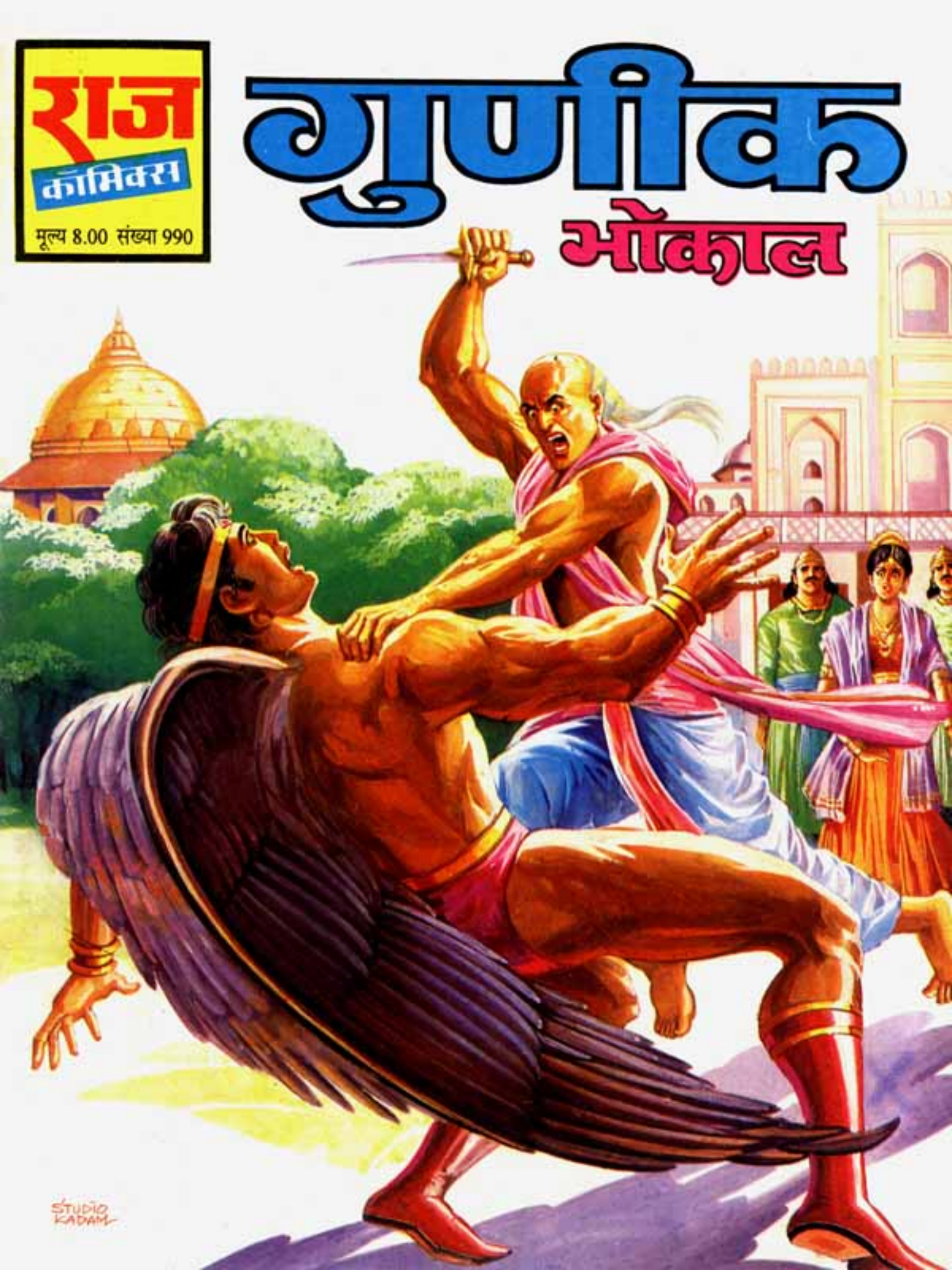

गुप्तिक

• लेखक : संजय गुप्ता • संपादक : मनीष गुप्ता • चित्रांकन : कदम स्टूडियो

दरबारियों से खचाखच भरा हुआ था विकासनगर का राजदरबार, लेकिन फिर भी वहां मौजूद था, ऐसा घोर सन्नाटा कि अगर सूई वहां गिरती तो ज्वालामुखी के फटने सा विस्फोट होता--

और वह सन्नाटा था उस पिंजरे के कारण जो दरबार के बीचों-बीच रखा हुआ था-

और उस संदेश पत्र के कारण जो भोकाल के हाथ में थमा हुआ था--

विकासनगर वासियो! बिना पिंजरा खोले इस सिंह को पिंजरे से बाहर निकालकर बुद्धि की धार दिखाओ या फिर तलवार की धार देखने के लिए तैयार रहो!
राजा सनकी देव

इस विचित्र पहेली ने विकासनगर वासियों के सामने एक सवाल खड़ा कर दिया था कि...

...उसका हल करके उन्होंने राजा सनकी देव की इस चुनौती को या तो बुद्धि से जीतना था...

©RAJA POCKET

...उसे एक बुद्धि पलक झपकते ही कर डालती है।

स्तब्ध महारानी ने गुणीक कामक उस व्यक्ति को आज्ञा दे दी--

कुछ ही क्षणों बाद--

मोम का जो सिंह शान से पिंजरे में मौजूद था, वह पिघलकर तेजी से बाहर की तरफ भाग रहा था--

सभी की फटी-फटी आंखों के सामने ही सिंह बिना पिंजरा खोले पिंजरे से बाहर पहुंच चुका था--

बुद्धि के उस जादूगर की बदौलत जिसने सिद्ध कर दिखाया था कि तलवार का बुद्धि से कोई मुकाबला नहीं--

और जिसके लिए भोकाल सहित सभी के मुख से एक ही स्वर निकला--

वाह!

वाह!

... या फिर जीता था तलवार से--

एक अनोखे द्वंद्व से घिरा हुआ था विकासनगर के हर धुरन्धर का मस्तिष्क--

अचानक वे तलवार खींचकर जिसका अंत कर दिया--

राजा सनकी देव को हम इस पहेली का उत्तर तलवार से देंगे।

नहींsss

यह आवाज राजदरबार के मुख्य द्वार की तरफ से गूंजी थी...

... उस शख्स के मुख से, जिसका चेहरा बुद्धिमत्ता के तेज और कदम आत्मविश्वास की दृढ़ता से भरे हुए थे--

शान से चलता हुआ वह रानी मोहिनी के सामने पहुंचा--

और फिर उसके मुख से गूंजी वह शान्त और प्रभावशाली आवाज--

मुझे गुणीक कहते हैं महारानी, अवसर दें तो मैं यह सिध्द कर सकता हूं कि जिस कार्य को लाखों तलवारें नहीं कर सकतीं...

जबकि रानी मोहिनी के कंठ से निकले प्रशंसा से लबालब भरे वे शब्द –

आपने दिखा दिया मान्यवर गुणीक कि हर सुख-सुविधा से सम्पन्न हमारे राज्य में उच्च कोटि बुद्धि की कमी थी। आपको विद्वान प्रमुख के पद पर नियुक्त करके हम इस कमी को पूरा करते हैं।

धन्यवाद महारानी!

विकासनगर की समस्याओं का तलवार से निवारण करने वाला भोकाल पहले से ही विकासनगर के पास था –

अब उन समस्याओं का बुद्धि से निवारण करने वाला गुणीक भी विकासनगर को मिल गया था –

लेकिन कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जिनका निवारण ना तलवार कर सकती है और ना बुद्धि –

और ऐसी समस्याओं को महामारी का नाम दिया जाता है –

स्वींऽऽऽ स्वींऽऽऽ

...और जब महामारी आती है तो...

... ना उससे तलवार वाला बच पाता है...

स्वोऽऽऽऽ

... और ना बुद्धि वाला---

स्वोऽऽऽऽ

विकासनगर में फैली यह बीमारी तेजी से अपने शिकारों की संख्या बढ़ा रही थी--

स्वोऽऽऽऽ

और उन्हें बना रही थी...

...मौत का शिकार -

धीरे-धीरे रफ्तार पर धारण करती यह समस्या राज दरबार तक जा पहुंची थी--

नगर में एकाएक फैला क्षय रोग तेजी से विस्तार कर रहा है और धीरे-धीरे संपूर्ण विकासनगर को अपनी चपेट में लेता जा रहा है।...

...इसके स्पष्टीकरण में आप क्या कहना चाहेंगे स्वास्थ्य मंत्री महोदय ?

मैंने इस विषय में सम्पूर्ण विकासनगर के वैद्यों से मंत्रणा की है महारानी, जिससे यह चौंका देने वाला तथ्य सामने आया है कि...

...क्षय रोग के फैलने के जो कारण होते हैं उनमें से एक का भी नगर में कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया।...

...बड़े-बड़े आयुर्वेदाचार्य आश्चर्य चकित हैं कि आखिर वह क्या कारण है जिसकी वजह से यह रोग इतनी तेजी से राजधानी में फैल रहा है।

काफी जांच-पड़ताल के पश्चात इस रोग के फैलने का एक ही कारण सभी वैद्यों की नजर में आया है और वह है...

...रोगी के शरीर पर पाया जानेवाला वह छोटा सा निशान जो मनुष्य के शरीर पर तब पड़ता है जब उसे कांटा या सूई चुभोई जाये।

इसका क्या तात्पर्य हुआ?

पता नहीं, अभी जांच-पड़ताल जारी है। शीघ्र ही हम किसी निष्कर्ष पर पहुंच जायेंगे।

स्वास्थ्य मंत्री ने जांच-पड़ताल के पश्चात किसी निष्कर्ष पर पहुंचना था--

लेकिन मोकारस की मुख मुद्रा कुछ और ही कहानी कह रही थी कि वह किसी निष्कर्ष पर पहुंच गया है-

विकासनगर का बहुत भीड़ भरा बाजार-

जहां मौजूद थी स्वस्थ व्यक्तियों की भीड़-

लेकिन इस भीड़ में मौजूद बहुत से व्यक्ति अब स्वस्थ रहने वाले नहीं थे-

इस लबादाधारी व्यक्ति के हाथ में बनी सूईयां और उसकी आंखों में नृत्य करती नफरत उसका प्रमाण थी--

इस समाज के कारण मुझे क्षय रोग लगा है मैं इस सारे समाज को इसका रोगी बना दूंगा।...

... इन सूईयों की सहायता से जो मेरे उस खून से बुझी हुई है जिसमें भरे हुए हैं क्षयरोग के जीवाणु।

... इन सूईयों को मैं इस तरह लोगों को चुभोकर उनके खून में रोग के कीटाणु पहुंचाकर उन्हें क्षय रोगी बना रहा हूं।

...और ऐसा मैं तब तक करता रहूंगा जब तक विकासनगर के बच्चे-बच्चे को इस रोग का रोगी नहीं बना देता।

जिस खिलौने खेल को वह लम्बे समय तक खेलने की सोचे बैठा था--

वह आज ही खत्म होने आ रहा था और इसका प्रमाण था सूई घुमोने के लिए बढ़ते उसके हाथ का उसके धड़ से जुदा हो जाना...

खच्च

अम्मा...

...और भोकाल के हाथों में रक्त रंजित तलवार का थमे होना-

स्वास्थ्य मंत्री की बातें सुनते ही मैं समझ गया था कि क्षयरोग का इतनी तेजी से फैलना किसी षड्यंत्र का हिस्सा है। कोई जीवाणु युक्त सूई लोगों के शरीर में चुभोकर उन्हें रोगी बना रहा है।...

आह!

...और अन्ततः मैंने तुझे दंड ही लिया पापी!

ओह!

तूने मुझे नहीं अपनी मृत्यु को दंडा है भोकाल!

चला की पुत्ती से उसने अपने दूसरे हाथ में थमी कई सूईयां भोकाल की तरफ उछाल दीं-

लेकिन भोकाल ने ना उन सूईयों को अपने तक पहुंचने का मौका दिया...

...और ना ही उसे दुबारा सूईयां फेंकने का--

तू इसी दण्ड का हकदार था।

आहह

तलवार के एक ही वार से उसकी गर्दन उसके धड़ से अलग करके भोकाल ने न्याय कर दिया।

लेकिन भोकाल का यह न्याय किसी की नजरों में अन्याय था--

प्रतिशोध लेना हमारे कुल की परम्परा है।समाज ने तुझे जो रोग प्रदान किया उसका प्रतिशोध समाज से लेकर तूने अपने कुल की परम्परा का निर्वाह करके कोई अपराध नहीं किया था, लेकिन...

... तुझे मौत के घाट उतारकर भोकाल ने बहुत बड़ा अपराध किया है।...

...मैं सौगंध खाता हूं जब तक भोकाल से तेरी हत्या का प्रतिशोध नहीं ले लूंगा तब तक ना मैं अन्न को हाथ लगाऊंगा...

... और ना अपने केशों में गांठ लगाऊंगा।

मेरे षड्यंत्रों में फंसकर तड़प-तड़पकर मरेगा भोकाल।

भोकाल के विरुद्ध कहीं षड्यंत्रों का ज्वालामुखी सुलग चुका था-

जिसका विस्फोट जल्दी ही विकासनगर के राज दरबार में हुआ-

सावधान! मैं सात दिनों के अंदर रानी मोहिनी की हत्या कर दूंगा। अज्ञात हत्यारा

कौन है यह हत्यारा? और वह हमारी हत्या क्यों करना चाहता है?

यह पत्र किसी विक्षिप्त व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज लगती है।

नहीं, इस संदेश को इतने हल्के ढंग से लेना ठीक नहीं है स्वामी!

पत्र जिसने भी भेजा है वह अवश्य ही रानीजी की हत्या करना चाहता है।

रूपसी तब कहना एक दम उचित है महाबली।

हमें इसे अत्यंत गम्भीरता से लेना होगा महाबली।

मैं आज ही सेनापति प्रवीणकुमार से मंत्रणाकर महारानी की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था का प्रबंध करता हूं।

मात्र सुरक्षा व्यवस्था से ही कुछ नहीं होगा महाबली! आपको हत्यारे को पकड़ने के लिए भी प्रयत्न करना होगा।

रानी मोहिनी की सुरक्षा व्यवस्था अत्यंत कड़ी कर दी गई—

सैनिकों के साथ महल के तीनों द्वारों को सेनापति प्रवीणकुमार, उपसेनापति रणधीर सिंह और महामंत्री चंद्रप्रकाश ने सम्भाल लिया।

और चोरी छुपे भोकाल स्वयं मौजूद था--

लेकिन मात्र सुरक्षा व्यवस्था में ही व्यस्त नहीं था भोकाल--

उसकी हत्यारे की तलाश भी जारी थी--

और उसकी वह तलाश इस गड़रिए की सूचना के साथ पूरी हुई--

मैं आज जब जंगल से बकरियां चराकर लौट रहा था तो मैंने वहां स्थित शिव मंदिर में चार व्यक्तियों को बैठे देखा...

--वेशभूषा और चेहरे से वे चारों व्यक्ति मुझे संदिग्ध लग रहे थे, भोकाल।

धन्यवाद मित्र, मैं उन्हें देखूंगा।

यह सूचना मिलने के पश्चात--

एक पल भी वहां नहीं रुका रहा भोकाल तुरन्त ही गड़रिये के बताए स्थान की तरफ चल पड़ा वह--

इसी मंदिर के बारे में गडरिये ने मुझे बताया था।

यहां चार हथियारबंद व्यक्तियों की मौजूदगी इस बात की पुष्टि भी करती है कि गडरिये ने जो कहा वह सत्य है।

यह अवश्य ही महारानी की हत्या की योजना बनाने के लिए यहां मौजूद हैं। ये चारों संभले इससे पहले ही मुझे इन पर वार देना चाहिए...

आक्रमण!

ओह!

आह्हऽऽऽ

अप्रत्याशित था भोकाल का आक्रमण...

...जिससे ना वे संभल पाये...

...और ना ही भोकाल ने उन्हें संभलने का कोई अवसर दिया--

इस समय इन्हें अचेत करना ही उचित है ताकि इन्हें राजमहल ले जाकर इनसे पूछताछ करके विक्रम नगर के विरुद्ध रचे जाने वाले सारे षड्यंत्र का पर्दाफाश किया जा सके।

चारों को अचेत कर...

शोकाल उन्हें लेकर राजमहल की तरफ बढ़ रहा था-

लेकिन उसे क्या मालूम था कि जिस षड्यंत्र को वह फाश करना चाहता था उसका निशाना विकासनगर नहीं...

... वह खुद था-

और उस षड्यंत्र में वह बहुत जल्द ही फंसने वाला था क्योंकि ...

... उस षड्यंत्र की आग अत्यधिक कड़ी सुरक्षा के बावजूद भी रानी मोहिनी तक जा पहुंची थी ...

सड़ड़

...उस व्यक्ति के रूप में-

... जिसका उद्देश्य उसके हाथ में थमें चमचमाते खंजर के रूप में स्पष्ट नजर आ रहा था-

तेरी हत्या करने का जो प्रण मैंने लिया था रानी मोहिनी...

...उसे पूरा करने मैं तुझ तक आ पहुंचा हूं।

स्वच्छ आह

जैसे ही खंजर की धार रानी के कांधे में धंसती हुई वैसे ही उसके कंठ से चीख उबल पड़ी-

तुरन्त ही चीख की प्रतिक्रिया हुई, सेनापति प्रवीण कुमार सैनिकों के साथ वहां पहुंचा –

ओह!

हतप्रभ खड़े रह गये सभी –

लेकिन हतप्रभ खड़े रहे नहीं, क्योंकि –

अगर वे खड़े ही रह जाते तो हत्यारा रानी मोहिनी को लाश बनाकर गिरा देता –

आह्ह

खच्च

खच्च

रानी को शिकार बनाने आया खुद शिकार बन चुका था –

ये कक्ष में पहुंचा कैसे?

इस गुप्त रास्ते से।

जंगल में स्थित शिव मंदिर में जाकर देखो वहां मौजूद चार व्यक्तियों की क्या स्थिति है?

!!

उन दुष्टों के बारे में पता करने के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है महारानी...

...मैं इन्हें यहीं ले आया हूं।

इन चारों की यह दशा किसने की?

मैंने!

ये चारों शिवमंदिर में आपकी हत्या की योजना बनाने में व्यस्त थे।...

...इसलिए मैं इन्हें अचेत करके यहां ले आया।

ये तुमने उचित नहीं किया भोकाल...

...ये चारों उस गुप्त रास्ते की सुरक्षा हेतु शिवमंदिर में मौजूद थे जो हमारे कक्ष से शिवमंदिर में जाकर ही खुलता है। ये हमारे अत्यंत विश्वासपात्र गुप्तचर सैनिक थे, इसलिए हमने इन्हें वहां तैनात किया था।...

...लेकिन बिना कारण जाने तुमने इन्हें अचेत करके वहां से हटा दिया...

...जिसका लाभ इस हत्यारे ने उठाया और वह हमारी हत्या करने यहां आ पहुंचा।

!!

मोकाल फटी-फटी आंखों से हत्यारे को...

...और सभी हैरानी से मोकाल की तरफ देख रहे थे--

हर एक की दृष्टि में मोकाल के लिए प्रश्न मौजूद थे-

जिन्हें तुरन्त ही समझ गया मोकाल-

अच्छा हुआ हत्यारे को सही समय पर समाप्त कर दिया गया, अगर वह महारानी का अहित करने में सफल हो जाता तो जो प्रश्न सभी की आंखों में मौजूद हैं ...

...मेरे लिए उनका उत्तर देना कठिन हो जाता।

राज विद्वान गुणीक ने बोलकर शान्त किया प्रजा के उस तूफान को--

जो कुछ हुआ हमें उसे भूल जाना चाहिए महारानी! अच्छा तो यही है कि आपकी हत्या करने से पहले ही हत्यारे को मौत के घाट उतार कर यह मामला समाप्त ही कर दिया गया।

आप ठीक कह रहे हैं गुणीक महोदय!

जो मामला राजमहल वालों के लिए समाप्त हो गया था---

वह किसी के लिए अभी शुरू ही हुआ था--

यह मेरे षड्यंत्र की समाप्ति नहीं आरम्भ है भोकाल,क्योंकि अभी तो मेरे षड्यंत्रों के शिकंजे ने तुझे फंसाना आरम्भ किया है...

... इन षड्यंत्रों की समाप्ति तो तेरे जीवन की समाप्ति के साथ ही होगी...

...और तुझे उस समाप्ति की तरफ ले जायेगा यह पत्र जो एक बार फिर हिलाकर रख देगा...

...सारे राजदरबार को--

रानी मोहिनी मेरे एक प्यादे को मारकर ये मत समझ लेना कि तेरे सिर पर मंडराता मृत्यु का काला साया टल गया। सात दिन गुजरने में अभी तीन दिन बाकी हैं और इतने ही दिन बाकी हैं तेरे जीवन के।...

...तुम्हारे प्राणों का शत्रु तुम्हारा वही अज्ञात हत्यारा।

ओह! इसका तात्पर्य हमारी हत्या का षड़यंत्र रचने वाला अभी भी जीवित है।

पहले की भांति अब वह आप तक ना पहुंच पाये इसका प्रबंध तुरन्त करवाईये महारानी!

रानी मोहिनी की सुरक्षा के प्रबंध पहले से अधिक कड़े कर दिये गये।

रानी मोहिनी जहां भी जाती थी सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी उसकी सुरक्षा व्यवस्था देखती थी --

ऐसा प्रतीत होता था जैसे विकासनगर का प्रत्येक सैनिक अपनी रानी की सुरक्षा में जुटा हुआ हो -

लेकिन उसको जरा भी चिन्ता नहीं थी अंधेरे में छिपे उस बड़ेयंकारी दिमाग के स्वामी को --

हा हा हा! लगाओ विकासनगर की सम्पूर्ण सेना रानी मोहिनी की सुरक्षा में लगाओ परन्तु रानी मोहिनी पर जो प्राणघातक आक्रमण होने वाला है उसे कोई नहीं रोक सकता।

अब षड़यंत्र के जाल में पूरी तरह फंस जायेगा भोकाल!

इधर भोकाल –

महारानी के वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आज सांय महारानी का विक्रमसनगर के समस्त निवासियों के बीच नागरिक अभिनन्दन किया जाना है। आज हमें इसका विशेष ध्यान रखना होगा कि ...

...कोई भी संदिग्ध व्यक्ति महारानी के पास ना पहुंच पाये।

चिन्ता ना करें महाबली, मैंने सारा प्रबंध कर लिया है। महारानी के पास जो भी पहुंचेगा उसकी पूरी तरह जांच-पड़ताल की जायेगी।...

...और रही सुरक्षा की बात तो सुरक्षा व्यवस्था इतनी कड़ी है कि सैनिकों की नजर से बचकर कोई चींटी भी महारानी तक नहीं पहुंच सकती।

आज सातवां दिन है यह दिन किसी तरह गुजर जाये तो चैन मिलेगा।

आज मुझे भी पूरी तरह सतर्क रहना है।

उसी शाम—

कहीं कोई गड़बड़ नहीं, सभी कुछ सामान्य रूप से चल रहा है।

वैसे इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच हत्यारा यहां आने का कदापि...

...साहस नहीं कर सकता।

ओह!

धड्

...यह भाला कहां से आया?

...किसने फेंका इसे?

अरे, इस पर तो कोई पत्र बंधा हुआ है।

...देखूं क्या लिखा है इसमें?

भोकाल ने भाले से बंधा पत्र खोला—

पत्र में लिखे शब्द पढ़ते ही भोकाल ऐसे चौंका जैसे उसके हाथ में थमा पत्र एकदम दहकता अंगारा बन गया हो।

सावधान महाबली!
लाल पोशाक और पीली पगड़ी वाला गुलाबों की जिस माला को महारानी के गले में डालेगा उसमें एक छोटा मगर अत्यंत विषैला सर्प छिपा हुआ होगा। वह उस सर्प से डसवा कर महारानी की हत्या करना चाहता है।
तुम्हारा शुभचिंतक।

ओह!

भोकाल के शरीर में सनसनी दौड़ती चली गई—

फिरकनी की भांति जब वह सामने मौजूद उस मंच की तरफ घूमा जहां रानी मोहिनी का अभिनन्दन हो रहा था तो वह उछल ही पड़ा—

लाल पोशाक! पीली पगड़ी। गुलाबों की माला।

वह व्यक्ति ही हत्यारा है...

...०००

वह अपने हाथ में थमी गुलाबों की उस माला को महारानी के गले में डालने जा रहा है। जिसमें विषैला सर्प छिपा हुआ है।...

..मुझे उसे रोकना होगा और मेरे पास मात्र एक क्षण है इसलिए उसे रोकने का इससे अच्छा साधन और कोई...

..नहीं होगा!

इधर भोकाल के हाथ से छूटकर भाला सनसनाया--

उधर लाल पोशाक और पीली पगड़ी वाले के अधरों पर मुस्कान खेली--

और चीखते हुए रानी मोहिनी को एक तेज धक्का दिया--

बचिए महारानी!

उसने तेजी से माला रानी मोहिनी के गले में डाली--

इधर महारानी नीचे गिरी----

और इधर उसके सीने के आरपार हो गया वह भाला---

आह!

सभी के मुंह से एक साथ निकला –

इस युवक ने अपने प्राणों का बलिदान देकर महारानी के प्राण बचा लिये।

हत्यारे को विफल कर दिया इस युवक के बलिदान ने।

महारानी पर भाला फेंकने वाला हत्यारा है कौन?

भाला फेंकने वाले को देखने के लिए जब सभी की निगाहें भाले के आने की दिशा में घूमीं तो...

...सभी ऐसे जड़ हो गये मानो उन्हे सांप सूंघ गया हो।

जड़ होते भी क्यों ना भाला फेंकने वाले के रूप में उन्हें नजर जो आ रहा था...

भोकाल!

काटो तो खून नहीं जैसी स्थिति थी भोकाल की —

म..मैंने भाला महारानी पर नहीं, उस युवक पर चलाया था जो महारानी के गले में सर्प युक्त माला डालने जा रहा था।

इस माला में तो कोई सर्प नहीं है। यह तो गुलाब के फूलों की माला है।

ल...लेकिन..

उसके लौकिक का जवाब उसकी बेगुनाही का प्रमाण उस कागज पर से भी मिट चुका था।

ये...पत्र!

उसके हाथ में फड़फड़ा रहा था कोरा कागज और अवाक से फड़फड़ा रहे थे उसके होंठ जिन पर कोई जवाब मौजूद नहीं था।

अब भोकाल अपनी सफाई में कुछ कह पाता...

...उससे पहले ही सिंह की भांति गरज उठी रानी मोहिनी—

स्वामीश!एक बलिदानी का अपमान मत करो। समस्त प्रजा ने देखा है इस मृतक ने अपने प्राण गंवाकर हमारे प्राण बचाये।

हमारी हत्या का प्रयास करने वाला अज्ञात हत्यारा भोकाल ही है।

बंदी बना लिया जाये इसे।

स्तब्ध खड़े रह गए भोकाल को...

...सैनिकों ने पलक झपकते ही बंदी बना लिया—

इसी के साथ मानों सारी प्रजा चीख उठी—

हत्यारे भोकाल को...

फांसी दो

फांसी दो

हत्यारा भोकाल

मुर्दाबाद

मुर्दाबाद

और यही चाहता था वह जिसके हलक से बहशी ठहाकों का तूफान उबल रहा था—

हा हा हा! मेरे षड्यंत्र के जाल में आज पूरी तरह फंस गया भोकाल। अपने लाख प्रयत्नों के बाद भी वह अपने आपको निर्दोष सिध्द नहीं कर सकता...

...भोकाल को अपने षड्यंत्र में फंसाने के लिए मैंने अपने दो प्रिय पुत्रों को खोया है एक रानी मोहिनी के कक्ष में और एक नागरिक अभिनन्दन स्थल पर... इसलिए मुझे भोकाल के साथ-साथ उसके दो प्रियों के भी प्राण चाहिए...

...ऐसा होगा तभी मेरे पुत्रों की आत्माओं को शान्ति मिलेगी!...

... तभी हमारे कुल की परम्परा की रक्षा हो सकेगी! और तभी लगेगी गुणीक की शिखा में गांठ!

हा हा हा!

क्या वह अपने षड्यंत्रों से भोकाल को फांसी दिलवा पाया और भोकाल के वे दो प्रियजन कौन कौन से थे जो अब उस षड्यंत्र-कारी के षड्यंत्र का शिकार बनने जा रहे थे?...

...जानने के लिए पढ़ें!

फांसी दो भोकाल को

क्रमशः